आधुनिक हिन्दी-काव्य का शुभारम्भ जनजागृति और राष्ट्रीय चेतना से हुआ। इस प्रकार हिन्दी-काव्य की यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ी उसमें नए-नए आयामों के संस्पर्श से नए-नए काव्य-आन्दोलन भी सामने आते गए जिनमें व्यक्ति और समाज के मुखौटे तत्युगीन परिस्थितियों के आधार पर रूपायित किए गए। इन विविध आकार-प्रकारों के प्रतिबिम्बन में भाषा, शैली, शिल्प और कथ्य भी परिवर्तित होते रहे। इस पूरे बदलाव में यही सार निकलकर सामने आता है कि भाषा संयोगात्मकता से वियोगात्मकता की ओर चली है। अर्थात् भाषा सहायक क्रियापदों और कारकचिह्नों के विलुप्तीकरण की क्लिष्टता से उनके प्रयोग किए जाने की सरलता की ओर चली है। आज यह सर्वमान्य है कि काव्य में भी पारदर्शिता का होना अतीव आवश्यक है। भाषा सहज और सरल होनी चाहिए। कहन नितान्त 'पूर्णमिदं' होना चाहिए। कहीं ऐसा न लगे कि कवि आधी भी बात नहीं कह सका जो कहने से शेष रह गया वह उसकी कुण्ठा में सङ्गृहीत होकर अविकसित रह गया। यही काव्य की विलक्षणता है जो कवि को सामान्य जन से अलग करती है।

सप्तकवि :

1 **डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव**
अहमदाबाद, गुजरात

2 **डॉ. भावना एन. सावलिया**
राजकोट, गुजरात

3 **प्रेमनाथ मिश्र**
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

4 **हेमलता 'भोली बेन'**
इन्दौर, मध्यप्रदेश

5 **अनमोल रागिनी 'चुनमुन'**
रामपुर, उत्तरप्रदेश

6 **मीरा भार्गव 'सुदर्शना'**
कटनी, मध्यप्रदेश

7 **अनूप कुमार झ्रोलिया**
लैगोस, वेस्ट अफ्रीका

समकालीन विमर्श में

वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-तृतीय)

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

सम्पादक-द्वय

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव
एवं
डॉ. भावना एन. सावलिया

प्रकाशन : अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संस्थान
गुजरात, अहमदाबाद

बड़े हर्ष की बात है कि 'समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी काव्य' के सन्दर्भ में 'सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन' सम्पादक-द्वय डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव एवं डॉ. भावना एन. सावलिया द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी ओर से उक्त काव्य-सङ्कलन के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभेच्छु
– **डॉ. अजय के. पटेल**
प्राचार्य,
श्रीकलजीभाई आर. कटारा
आर्ट्स कॉलेज शामलाजी,
अरावली, गुजरात
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बोर्ड ऑफ स्टडी (पाठ्यक्रम समिति)
हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय,
पाटण, गुजरात

Scanned by CamScanner

समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-तृतीय)

सम्पादक-द्वय

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

एवं

डॉ. भावना एन. सावलिया

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य संस्थान

गुजरात, अहमदाबाद

Scanned by CamScanner

समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-तृतीय)

अनुक्रम

कवि-क्रम	पृष्ठ सङ्ख्या
♦ सम्पादकीय	7
♦ रचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन	20
डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव	**26-31**
♦ विशुद्ध घनाक्षरी	27
♦ सबका सार रियाज़	29
♦ पदों पर भूषित जो श्रीमन्त	31
डॉ. भावना एन. सावलिया	**32-37**
♦ सरस्वती वन्दना	33
♦ लौट आओ प्रिय अपने देश	34
♦ मैं कविता हूँ	35
♦ चोरी माखन की करे	36
♦ त्याग	37
प्रेमनाथ मिश्र	**38-44**
♦ क़दम बढ़ाते चलना राही	39
♦ मीत परमानन्द हो तुम	40
♦ आ गया मौसम सुहाना	41
♦ प्रेरणा गीत	42
♦ वो आँसू बह जाते	43
♦ अब तो सुनो हमारी	44

Scanned by CamScanner

चेतावनी : सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र अहमदाबाद गुजरात होगा। इस सङ्कलन में प्रस्तुत रचनाओं में रचनाकारों के उनके अपने निजी भाव और विचार हैं। उनसे सम्पादक-द्वय या संस्थान के सहमत या असहमत होने से कोई सरोकार नहीं है।

ISBN : 978-93-94719-66-8

© डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव
(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक :

Also available on: amazon.in

संगिनी प्रकाशन

कार्यालय: 398ए, अंबेडकर नगर, विजय नगर, कानपुर-208005
मोबाइल: +91 9696555858, ई-मेल: sanginiprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2023

मूल्य :

सजिल्द : ₹ 220/- (दो सौ बीस मात्र)

आवरण सज्जा :

इंजी. रिन्की चन्द्रा

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Samkalin Vimarsh mein Vartamaan Hindi-Kavya
Edited by : Dr. Chandrapalsingh Yadav
Dr. Bhavna N. Savalia

Scanned by CamScanner